28 चंदामामा

दूर गगन में निकले तारे,
आए चंदामामा प्यारे।
संबके मन को बहलाते हैं,
नए रूप नित दिखलाते हैं।

देखो इनके ढंग निराले,
लगते कितने भोले-भाले।
सुबह-सवेरे छिप जाते हैं,
जैसे हमसे शरमाते हैं।

मेरे चंदामामा आना,
साथ में मामी को भी लाना।
केले, केक, जलेबी खाना,
अपने घर की बात सुनाना।